बैगा जनजातियों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकताः एक मूल्यांकन

(मध्यप्रदेश राज्य के सीधी जिले के विशेष संदर्भ में)

▫ व्योमकेश पाण्डेय
▫ आकांक्षा माहेश्वरी

सारांशः मानव की उत्पत्ति के साथ उसके विकास का प्रमुख आधार स्वास्थ्य है। यदि व्यक्ति स्वस्थ होगा तभी वह स्वस्थ समाज का निर्माण कर पाएगा। स्वस्थ समाज अपने विकास के लिए परिवेशात्मतक दशाओं से निरंतर अन्तरक्रिया करता रहता है। स्वास्थ्य एवं आरोग्य प्रत्येक व्यक्ति के अलग-अलग स्वास्थ्य संबंधी शारीरिक दशाओं पर निर्भर करता है। व्यक्तियों के स्वास्थ्य निर्धारण की प्रक्रिया उनकी प्रजाति द्वारा न होकर उनके जीवन की दशाओं द्वारा होती है। व्यक्तिगत स्वच्छता का प्रभाव व्यक्ति के ऊपर पड़ता है। व्यक्ति की शारीरिक एवं मानसिक स्थितियाँ उनके स्वस्थ शरीर से अंतर सम्बंधित हैं। प्रस्तुत अध्ययन बैगा जनजाति में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता पर आधारित है। केन्द्रीय भारत का हिस्सा मध्यप्रदेश राज्य एक बड़े आदिवासी जनसंख्या का घर है, जो काफी हद तक मुख्यधारा के विकास से कटे हुए हैं, बैगा जनजाति की घटती संख्या को देखते हुए केंद्र सरकार ने इनको विलुप्त प्राय जनजाति की श्रेणी में रखा है और इनको आगे बढ़ाने के लिए कई योजनाओं के साथ इनको प्रोत्साहित किया जा रहा है। राज्य में अधिसूचित 46 अनुसूचित जनजातियों में से तीन को विशेष रूप से कमजोर जनजाति (पीवीटीजी) के रूप में घोषित किया गया है और ये आदिवासी समूह हैं बैगा, भरिया और सहरिया। ये जनजातियाँ आधुनिक सुविधाओं से दूर खतरनाक पहाड़ी इलाकों और घने जंगलों में रहते हैं। बैगा जनजाति मध्यप्रदेश में पाए जाने वाले एक विशेष रूप से कमजोर जनजाति (पीवीटीजी) है और ये यहाँ के पूर्वी हिस्से में पाए जाते हैं। प्रस्तुत शोध में बैगा जनजाति के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता में बैगा जनजाति के दैनिक जीवन तथा उनके रहन-सहन, भौगोलिक परिवेश और स्वास्थ्य समस्याओं का मूल्यांकन कर ज्ञात आंकड़ों से यह निष्कर्ष निकाला गया कि बैगा जनजाति में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता में कमी अशिक्षा, अज्ञानता एवं निर्धनता का प्रतिफल है। इन समुदायों और उनके निवास स्थान कई मूल गुणवत्ता सेवा से वंचित रहे हैं और विभिन्न कारकों के पहुँच के बाहर रहे हैं। इन समुदाय और उनके क्षेत्रों के गुणात्मक विकास पर असर पड़ा है।

महत्वपूर्ण शब्दः बैगा जनजाति, स्वच्छता, परिवेश, शारीरिक, सामाजिक, जागरुकता, स्वास्थ्य की स्थिति।

प्रस्तावना

मानव के जीवन की आवश्यक दशाएँ उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक परिवेश पर निर्भर करती हैं व्यक्ति के स्वास्थ्य की क्षमता उसके शारीरिक अवयवों की स्वास्थता पर आधारित होती है। स्वस्थता के कारण ही जीवनयापन की मूलभूत विशिष्टताएँ मनुष्य के

▫ M. Phil Student MCNUJC, Bhopal M.P
▫ M. Phil Student MCNUJC, Bhopal M.P

शरीर को क्रियान्वित करती हैं। वह जिस परिवेश, समाज में निवास करता है, उसकी वायु, जल, प्रकाश एवं अन्य प्रतिजनित कारक स्वास्थ्य की दशाओं का निर्धारण करते हैं। व्यक्तियों के स्वास्थ्य निर्धारण की प्रक्रिया उनकी जाति (संतान) के द्वारा न होकर उनके जीवन की दशाओं द्वारा होती है। मनुष्य जीवन से संघर्ष करते हुए अपना विकास करता है। सामजिक वातावरण के साथ भौगोलिक वातावरण का प्रभाव व्यक्ति के व्यवहारों, मनोदशाओं तथा स्वास्थ्य पर पड़ता है। मानव समुदाय विकास के साथ-साथ अपनी संस्कृति और सभ्यता को अपने परिवेश के अनुकूल समायोजित करता है। स्पष्टतः भौतिक पर्यावरण मानव जीवन की सामाजिक, संस्कृति एवं शारीरिक दशाओं का एक आवश्यक अंग है। (ओझा, 1990)

भौतिक एवं पर्यावरण सम्बन्धी स्वच्छता के साथ-साथ मनुष्य को अपने शरीर की रक्षा के लिए अपने शारीरिक स्वच्छता पर भी ध्यान देना चाहिए। स्वास्थ्य का सम्बन्ध पर्यावरण से संचालित होता है। यदि मनुष्य का मन और स्वास्थ्य आरोग्य है तो वह स्वास्थ्य संबंधी बीमारी से दूर रहेगा। सामन्यतः सभी जानते हैं कि, स्वास्थ्य क्या है? परन्तु इसकी एक सुनिश्चित या सुस्पष्ट परिभाषा देना कठिन है। स्वास्थ्य को रोग के सन्दर्भ के बिना परिभाषित करना भी बहुत कठिन काम है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने संविधान में स्वास्थ्य को कुछ इस तरह से बताया है कि स्वास्थ्य वह दशा है जिसमें सम्पूर्ण शारीरिक, सामाजिक और मानसिक संतुष्टि हो, शरीर में किसी रोग का ना होना पूर्ण स्वास्थ्य नहीं है। स्वास्थ्य एक ऐसी स्थिति है जिसके अंतर्गत शारीरिक एवं मानसिक दशाएँ भौतिक जगत से समन्वय बनाये रखने में सक्षम रहती हैं (यादव 1994)। व्यक्ति और उसके पर्यावरण के मध्य समायोजन की स्थिति स्वास्थ्य हैं। इस परिवेश की विभिन्न शक्तियाँ संयुक्त होकर व्यक्ति के स्वास्थ्य की दशाओं का निर्धारण करती हैं। देश में अनुसूचित जनजातियों में एक बड़ी संख्या प्रदेश में निवास करती है जहाँ बैगा, सहरिया, भरिया प्रमुख हैं जिसमें बैगा जनजाति को केंद्र सरकार के द्वारा विशेष अल्पसंख्यक के रूप में रखा गया है और इनको विशेष रूप से संरक्षित करने के लिए आर्थिक सहायता के साथ सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है तथा मध्यप्रदेश सरकार आदिम जाति कल्याण विभाग जो इनके विकास के लिए बनाया गया है।

जनजातीय लोग प्रकृति प्रेमी होते हैं और प्रकृति की पूजा करते हैं। जंगल, पहाड़, नदियों और सूर्य आदि इनके द्वारा पूजे जाते हैं। हिन्दुओं के देव शिव जनजातीय लोगों के भी देव हैं और शिव के कई नाम जैसे बड़ादेव, बूढ़ादेव आदि नामों से ये शिव को पुकारते हैं और पूजा करते हैं भारत में 400 से अधिक जनजातियाँ निवास करती हैं और सभी की अलग-अलग परम्पराएँ और रीति-रिवास होते हुए भी मूल रूप से भिन्नता अधिक नहीं है। मध्यप्रदेश भारत का हृदय प्रदेश होने के साथ-साथ सबसे अधिक वनों का राज्य भी है यह मुख्य रूप से बैगा, भारिया, भील, कोरकू, सहरिया आदि जनजातियाँ निवास करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में मीडिया की पहुँच धीरे-धीरे बढ़ रही हैं और संचार के माध्यमों में विज्ञापन के साथ जो सामग्री प्रस्तुत की जाती है उसका बहुत हद तक प्रभाव पड़ता है किन्तु कुछ लोग संचार के माध्यमों से प्रभावित नहीं होते हैं या यूँ कहा जा सकता है कि सीमित रूप से प्रभावित होते हैं। मीडिया और तकनीकी का दायरा बढ़ने के साथ-साथ इसकी पहुँच, उपयोग और उपलब्धता भी बढ़ी है। संचार के माध्यमों पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो और टेलीविजन का उपयोग लगातार बढ़ रहा है और जनजातीय बाहुल्य क्षेत्रों में भी इसका उपयोग बढ़ रहा है। मीडिया के द्वारा कैसे जनजातियों ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विकास हो रहा है और कैसे ये लोग विकास की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं इसमें जो प्रमुख है वह यह है कि बैगा जनजाति में स्वास्थ्य के प्रति कितनी जागरूकता आ रही है, इस शोध के जरिए इन्हीं पहलुओं को जानने का प्रयास किया जा रहा है।

इस शोध कार्य में प्रमुख रूप से 'बैगा जनजाति में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता- एक मूल्यांकन' का अध्ययन किया गया है। कुछ मापदंडों के अंतर्गत शोध की प्रक्रिया के अनुसार जानकारी एकत्र कर निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास इस शोध कार्य के माध्यम से किया गया है।

जनजातीय समाज- मांडलहाबल ने अपनी

पुस्तक 'Man in Primitivewrrta' में कहा है "एक जनजाति एक सामाजिक समूह है जो एक विशेष भाषा बोलता है। एक विशेष संस्कृति रखता है, जो दूसरे जनजातीय समूह से पृथक करती है। वह अनिवार्य रूप से राजनैतिक संगठन नहीं है।

गीलिन ने अपनी पुस्तक 'Cultural Sociology' में कहा "स्थानीय आदिम समूहों के किसी भी संग्रह को जो कि एक सामान्य क्षेत्र में रहता है, एक सामान्य भाषा बोलता है। एक सामान्य संस्कृति का अनुसरण करता है, एक जनजाति है।"

साहित्य पुनरावलोकन-

जनजातियों को लेकर भारत में पहले भी कई महत्वपूर्ण शोध कार्य हो चुके हैं। पहले हुए शोधों में कई जानकारियाँ सामने आई और सरकार के द्वारा भी कई शोध कार्य कराए गए हैं। इन शोध कार्यों की मदद से जनजातियों की जीवन शैली, मान्यताएँ, सामाजिक, आर्थिक विकास और स्वास्थ्य के साथ अन्य जानकारियाँ उपलब्ध हुई हैं। ऐसे कई लेखकों की किताबें भी उपलब्ध हैं, जिनमें शोध कार्य और उससे जुड़ी तमाम चीजें जैसे- शोध पद्धति, आकड़ों के संकलन की प्रक्रिया और विश्लेषण आदि का वर्णन किया गया है।

1. कोठारी, सी.आर, रिसर्च मैथडोलोजी 2004, न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली इसमें शोध के तमाम आयाम के साथ जरूरी विषय वस्तु का वर्णन किया गया है।

2. मिश्रा, एस.के.(2008) "ग्रामीण विकास की धुरी है पंचायती राज" कुरुक्षेत्र, नई दिल्ली में निष्कर्ष निकला कि ग्रामीण विकास के फलीभूत होने के लिए जरूरी है कि ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त भय, अशिक्षा, अज्ञानता, गरीबी, भ्रष्टाचार, जातिवाद आदि का उन्मूलन कर लोगों को अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाए। ग्रामीण जनों की भागीदारी इस उद्देश्य से महत्वपूर्ण हो सकती है। समाज के सभी वर्गों का सकारात्मक सहयोग, पंचायती राज की सफलता के लिए रामबाण सिद्ध हो सकता है।

3. प्रधान, अशोक एवं गुहा, श्रीमती मंजुला (2011) "छत्तीसगढ़ में सँवरा जनजाति का आर्थिक जीवन एक अध्ययन" ने अपने अध्ययन से छत्तीसगढ़ में निवास करने वाली संवरा जनजाति की आर्थिक स्थिति कृषि पर आधारित है। दैव निदर्शन पद्धति से चुने गए 361 सवंरा परिवारों से प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट है की 61.31 प्रतिशत जनसंख्या क्रियाशील है। संवरा जनजाति की आधी जनसंख्या 26 प्रतिशत कृषि श्रमिक हैं। वर्तमान में इस जनजाति की एक तिहाई 69.25 प्रतिशत परिवारों में प्रति परिवार आय रुपये 4001-7000 के मध्य है।

4. परमार, संदीप "पंचायतीराज में ग्रामीण शक्ति संरचनाः निरंतरता एवं परिवर्तन, मानव" (22-4) ने अपने अध्ययन में यह बताया कि भारत के भिन्न-भिन्न एवं दूरस्थ क्षेत्रों से संबंधित भागों का अध्ययन किया गया है। इसमें ग्रामीण शक्ति-संरचना, तथा नेतृत्व में परिवर्तनों का आभास तो मिलता है परन्तु साथ ही परंपरा से जुड़ाव भी।

5. श्रीवास्तव कौशल के नोरियाल, डी.के. श्रीवास्तव तनुजा, 1998, "आदिवासियों का व्यावसायिक ढांचा और उनकी शैक्षिक स्थिति" परिपेक्ष्य वर्ष 5, अंक 1-2

6. वर्मा, मोनिका, पाल, सुरेन्द्र, भारतीय जनजातीय समाज 2014 (माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल) मध्यप्रदेश माध्यम, इस शोध में जनजातीय समाज के कई पहलुओं को ध्यान में रखकर कार्य किया गया है और इस शोध के परिणाम से जनजातियों की कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ सामने आई हैं जैसे उन तक मीडिया की पहुँच, उपलब्धता, आस्थाएँ, संवाद परम्पराएँ, सामाजिक और राजनीतिक अवधारणाएँ आदि।

7. फडके, वी.एस. और एस.एस. पेडनेकर के अदयान के अनुसार उन्होंने पाया कि जनजातीय लोग नई खोज और तकनीक को बहुत देर से अपनाते हैं जिससे उनके विकास की शुरुआत देर से होती है।

8. सिंह, विनोद शंकर, भारतीय समाज एवं सामाजिक परम्पराएँ, इस पुस्तक में जनजातियों के बारे में जानकारी के लिए अच्छा माध्यम है।

9. मिश्र, शशिकान्त, परंपरागत संचार माध्यमों का आदिवासी समुदाय पर प्रभाव (मंडला जिले की बैगा जनजाति के विशेष सन्दर्भ में) इस शोध में बैगा जनजाति

के परम्परागत संचार माध्यमों का अध्ययन किया गया है। यह शोध कार्य मंडला जिले में जनजातियों पर ही किया गया था, अतः इस शोध से मुझे महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिली।

शोध के उद्देश्यः

- बैगा जनजाति में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का मूल्यांकन।
- बैगा जनजाति में स्वास्थ्य संबंधी समस्या का अध्ययन।

शोध की परिकल्पनाः

- बैगा जनजाति में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता आई है।
- बैगा जनजाति स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता के लिए काम कर रही है।

शोध का महत्वः

शोध का महत्व यह है कि इस जनजाति के सदस्यों में स्वास्थ्य जागरूकता तथा उनकी समस्याओं को ज्ञात करके एवं डाटा तैयार करके प्रस्तुत किया जाए, ताकि सरकार द्वारा ऐसी योजनाएँ बनायी जाए कि इनमें स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता लाई जा सके एवं इनके स्वास्थ्य स्तर को उच्च किया जा सके।

शोध प्रविधिः

सैद्धांतिक ढांचा- किसी भी शोध कार्य में उसका सैद्धांतिक ढांचा बहुत ही महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसके अंतर्गत हम उन सिद्धांतों के आधार पर अपने शोध कार्य की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हैं जिनका प्रभाव उस सिद्धांत के अनुरूप लोगों पर पड़ता है। इस शोध कार्य में सिद्धांतों के आधार पर कार्य किया गया है।

प्रस्तुत शोध में बैगा जनजाति में स्वास्थ्य के प्रति जारुकता का मूल्यांकन किया गया है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोत को प्रयोग में लाया गया है। प्राथमिक शोध में गुणात्मक एवं गणनात्मक दोनों प्रविधियों में साक्षात्कार, अनुसूची, अवलोकन समूह परिचर्चा प्रविधि को शामिल किया गया है। शोध अनुसूची में स्वास्थ्य समस्या तथा स्वास्थ्य से सम्बंधित प्रश्नों को शामिल किया गया। अवलोकन, साक्षात्कार और केन्द्रीय समूह परिचर्चा द्वारा बैगा जनजाति के सदस्यों में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता का मूल्यांकन किया गया।

प्राथमिक स्रोत

प्राथमिक स्रोत वह स्रोत है जिसके द्वारा प्राथमिक आंकड़ों को स्वयं शोधकर्ता सबसे पहले विशेष उद्देश्य के लिए संकलित करता है। प्राथमिक स्रोत गुणात्मक एवं गणनात्मक दोनों प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

गणनात्मक शोध

जिन पद्धतियों के द्वारा तथ्यों का अवलोकन करके संख्यात्मक आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाते हैं उसे शोध की परिणात्मक पद्धतियाँ कहते हैं। जिसमें साक्षात्कार, अनुसूची का उपयोग किया गया है। (अग्रवाल, एट, एल 2007)

गुणात्मक शोध

सामाजिक अध्ययन घटनाओं के अध्ययन के लिए अनेक ऐसी पद्धतियों का भी उपयोग किया जाता है जो गुणात्मक विशेषताओं जैसे लोगों की मनोवृतियों तथा मानव व्यवहारों पर विभिन्न संस्थाओं और विश्वासों के प्रभाव को स्पष्ट कर सके। वास्तव में सामाजिक घटनाओं का एक अमूर्त हिस्सा होता है। (कोली, 2010)। इसमें अनेक पद्धतियों के द्वारा इन गुणात्मक विशेषताओं का अध्ययन करके उनसे संबंधित निष्कर्ष संख्या के रूप में प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जिसमें साक्षात्कार, अवलोकन, समूह चर्चा का उपयोग किया गया है। (अग्रवाल, एट. एल. 2007)

द्वितीय स्त्रोत

इसके अंतर्गत वे सूचनाएँ व आँकड़े आते हैं, जो शोध को प्रकाशित व अप्रकाशित रिपोर्ट सांख्यकीय, पत्र डायरी, टेप, इंटरनेट से प्राप्त होते हैं। द्वितीयक स्रोत के रूप में लघु शोध प्रबंध, सरकारी रिपोर्ट, संचार पत्र-पत्रिका का अध्ययन कर तथ्यों को निकला गया है।

निदर्शन (न्यादर्श)-

बैगा जनजाति में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के मूल्यांकन के लिए मध्यप्रदेश के सीधी जिले के दो ग्रामों को शामिल किया गया है। जिसमें प्रतिदर्शों के चयन के

लिए असम्भाविता निदर्शन का प्रयोग किया गया, जिसमें 150 सदस्यों को शामिल किया गया है। आकड़ों के संकलन की रूपरेखा के अंतर्गत उद्देश्य के आधार पर प्रश्नावली व अनुसूची के द्वारा प्रश्नों के उत्तर जानकर आंकड़ों का संकलन किया गया है। प्रश्न वैकल्पिक थे लेकिन आपसी चर्चा कर उनसे कुछ और जानकारी के लिए प्रश्न पूछे गए। चूँकि अध्ययन बैगा जनजातियों के स्वास्थ्य जागरुकता पर था तो उन्हीं पहलुओं को ध्यान में रखकर बनाया गया ताकि उद्देश्य को पूरा किया जा सके।

आँकड़ों के संकलन के उपकरण-

आँकड़ों के संकलन के लिए प्रश्नावली और अनुसूची का प्रयोग किया गया है वैकल्पिक प्रश्नों के माध्यम से उत्तरदाताओं से जानकारी संकलित की गई। अनुसूची का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि ज्यादा पढ़े-लिखे न होने के कारण प्रश्नावली को भली-भांति समझने में कठिनाई होती। इस शोध कार्य में स्थानीय पढ़ी-लिखी महिला का भी आंकड़ों के संकलन में सहयोग लिया गया।

परिणाम एवं विवेचना

प्रस्तुत अध्ययन में बैगा जनजाति में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है जिसमें स्वास्थ्य से संबंधित प्रश्नों को सारणी द्वारा विश्लेषित किया गया है। जो इस प्रकार हैं- 1. उत्तरदाताओं के **आवास के आसपास स्वच्छता का वर्गीकरण-**

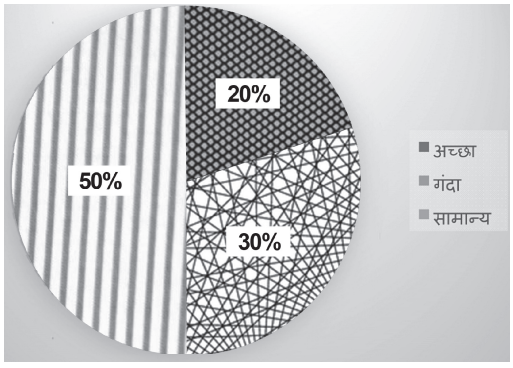

चित्र क्रमांक 1- विश्लेषित आकड़ों में स्पष्ट है कि अधिकांश बैगा जनजाति के आवास के आस-पास स्वच्छता सामान्य रहती है जिसका प्रतिशत 50% (75) है। आवास के आसपास गंदगी 30% (45) एवं अच्छी तरह से साफ-सफाई 20% (30) रहती है। इस प्रकार से प्राप्त आकड़ों से यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश लोगों के यहाँ स्वच्छता सामान्य रहती है।

2. उत्तरदाताओं द्वारा आवास का कूड़ा-कचरा फेकने के आधार पर वर्गीकरण-

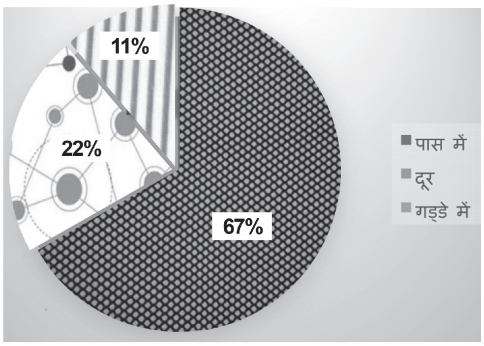

चित्र क्रमांक 2- आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 100 (66.67%) लोग अपने घर के पास में ही कचरा फेंकते है जबकि 33 (22%) घर से दूर तथा 17 (11.33%) नियत स्थान पर ही कचरे को फेंकने का कार्य करते हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि घर के पास में कचरा फेंकने वाले की संख्या ज्यादा है।

3. उत्तरदाताओं के आवास की सफाई के सन्दर्भ में दैनिक अन्तराल का विवरण-

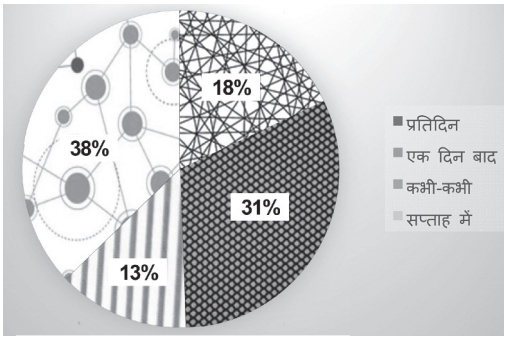

चित्र क्रमांक 3 बैगा जनजाति के लोग अपने आवास की सफाई करते हैं इस संबंध में जो शोध के माध्यम से जो आंकड़े आए, उसमें सप्ताह में सफाई करने वालों की संख्या 56 (37.33%) रही, एक दिन के अंतराल में सफाई करने वाले 47 (31.34%) तथा प्रतिदिन सफाई का आंकड़ा 27(18%) एवं 20 (13.33%) जो कभी-कभी ही घर की सफाई में ध्यान देते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकला जा सकता है कि ज्यादातर घरों में सप्ताह में ही सफाई

होती है। सफाई को लेकर ज्यादा जागरूक नहीं हैं।

4. उत्तरदाताओं के द्वारा पीने का पानी रखने की व्यवस्था के आधार पर वर्गीकरण-

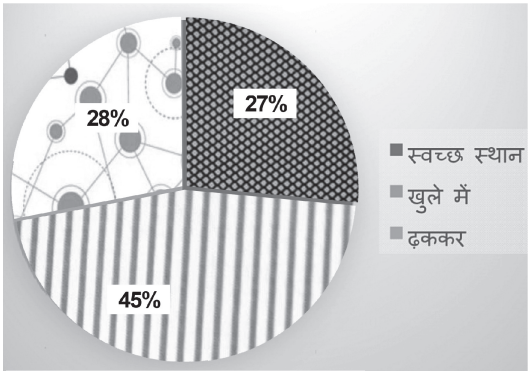

चित्र क्रमांक 4 से स्पष्ट है कि 68 (45.33%) उत्तरदाताओं के यहाँ पानी खुले में ही रखा रहता है, ढ़ंककर 42 (28%) लोग रखते हैं लेकिन पानी को स्वच्छ और पूरी तरह से व्यवस्थित जगह पर रखने वाले की संख्या 40 (26.66%) ही है। इससे साफ होता है कि ज्यादातर बीमारी और इनके स्वास्थ्य पर गहरा असर पानी से फैलने के कारण होती है।

5. उत्तरदाताओं के दांतों की सफाई की प्रवृति के आधार पर

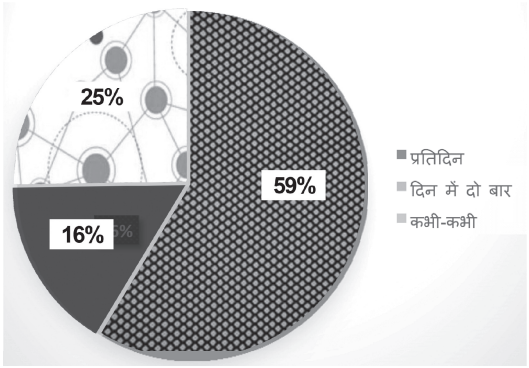

चित्र क्रमांक 5 विश्लेषित आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि 88 (58.66%) उत्तरदाता प्रतिदिन दातों की सफाई करते हैं 38 (25.33%) उत्तरदाता कभी-कभी दातों की सफाई में ध्यान देते हैं जबकि दिन में दो बार सफाई करने वाले 24 (16%) हैं।

6. उत्तराताओं के यहाँ स्नान करने की प्रवृति के आधार पर वर्गीकरण-

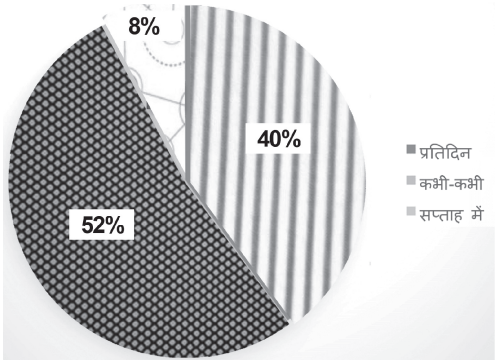

चित्र क्रमांक 6 इसमें आकड़ों से निष्कर्ष निकलता है कि 78 (52%) उत्तरदाता कभी-कभी स्नान करते हैं कहने का तात्पर्य यह कि नहाने का कोई निश्चित समय नहीं है लेकिन 60(40%) उत्तरदाता ने कहा है कि वो बिना स्नान के नहीं रहते यदि उनको सुविधा हुई तो दिन में दो बार भी स्नान कर लेते हैं वहीं 12 (8%) ने जवाब में कहा कि सप्ताह में किसी भी दिन स्नान कर लेते हैं। आकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ज्यादातर लोग हर दिन स्नान नहीं करते हैं।

7. पेयजल की स्थिति के आधार पर वर्गीकरण-

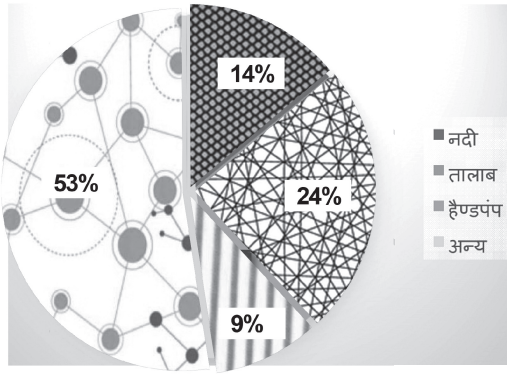

चित्र क्रमांक 7 उत्तरदाताओं के बताये आधार पर आंकड़े आये कि पेयजल के लिए कोई एक साधन उचित नहीं है जिसका आंकड़ा 78 (52%) है, वहीं 37 (24.66%) उत्तरदाताओं के आधार पर ये लोग तालाब के पानी का उपयोग करते हैं, जबकि नदी जैसे जल स्त्रोत का उपयोग 21(14%) ही करते हैं लेकिन 14 (9.33%) का कहना था कि पास में हैंडपंप होने के कारण इसका उपयोग हम लोगों के द्वारा किया जाता है। इससे साफ होता है कि बैगा जनजाति के आसपास कोई ऐसा साधन उपलब्ध नहीं है

जिससे वो अपने पेयजल की समस्या का समाधान कर सकें।

8. उत्तरदाताओं के स्नान करने व शारीरिक सफाई के लिए उपयोग में लाए जाने वाले साधनों के आधार पर वर्गीकरण-

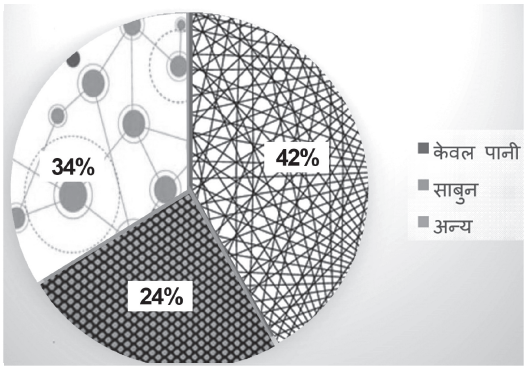

चित्र क्रमांक 8 विश्लेषित आंकड़ों से स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता स्नान के लिए केवल पानी का प्रयोग करते हैं जिनका प्रतिशत 63(42%) है, वही मिट्टी से स्नान करने वाले 51 (34%) है जबकि 36 (24%) उत्तरदाता ही साबुन का प्रयोग करते हैं। इससे साफ होता है कि वर्तमान युग में भी अपने शरीर को कीटाणुओं से बचाने के लिए बैगा जनजाति साबुन का प्रयोग कम करते हैं वो केवल पानी से से ही स्नान कर लेते हैं।

9. उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी स्वास्थ्य समस्या के आधार पर वर्गीकरण-

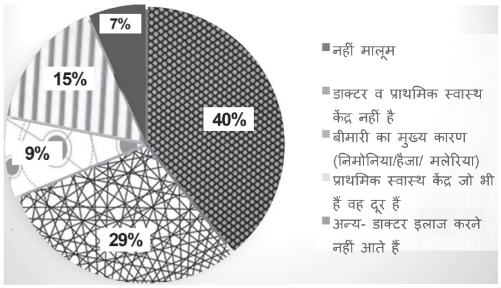

चित्र क्रमांक 9 इन सब आंकड़ों से स्पष्ट है कि बैगा जनजाति को स्वास्थ्य समस्या के बारे में कोई जानकारी नहीं है जिनका प्रतिशत 59 (39.33%) रहा। 44 (29.33%) उत्तरदाताओं का कहना था कि उनके गाँव में स्वास्थ्य केंद्र की व्यवस्था नहीं है तथा यहीं कि मुख्य बीमारियों का मुख्य कारण (निमोनिया, हैजा, मलेरिया) 14 (9.33%) है, एवं 23 (15.33%) का कहना था कि स्वास्थ्य केंद्र दूर होने के कारण बहुत-सी समस्या होती है पर किसी तरह से यदि स्वास्थ्य केंद्र तक मरीज को ले जाया जाता है तो समय पर डाक्टर ही उपलब्ध नहीं हो पाते हैं जिनका प्रतिशत रहा है 10 (6.667%)।

10. महिला उत्तरदाताओं से पूंछा गया की क्या आप मासिक धर्म में सेनेट्री नैपकिन का उपयोग करती हैं-

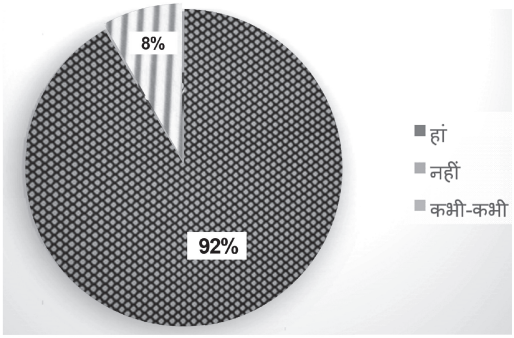

हमारे शोध का यह प्रश्न केवल महिलाओं के स्वास्थ्य से जुड़ा होने के साथ उनके लिए निजी भी था इस पर एक स्थानीय महिला की सहयता लेनी पड़ी, जिसने अनुसूची के माध्यम से इस प्रश्न को भरा जिसमें आंकड़े आये वह काफी चौकाने वाले निकले कि उस गाँव में महिलाएँ माहवारी के समय विस्पर का उपयोग ही नहीं करती जिनका प्रतिशत 65 (92.33%) रहा, वही जो उस गाँव में नई बहू आई थी उनका कहना था कि कभी-कभी इसका प्रयोग करती है जिनका प्रतिशत 6 (8%) रहा, उनका कहना था कि लज्जावश अपने पति से इसको बाजार से नहीं मँगवा पाती हैं। अतः इस प्राप्त आंकड़ों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बैगा जनजाति में अस्वस्थता व स्वास्थ्य समस्या का प्रमुख कारण इन्हें स्वास्थ्य के बारे में अधिक जानकारी न होना है जिस कारण से यह पीछे जा रहे हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव-

विश्लेषित उपरोक्त आंकड़ों के आधार मानते हुए यह निष्कर्ष निकला गया कि अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश उत्तरदाता के आवास के आस-पास की स्वच्छता सामान्यतः 50 प्रतिशत होती है, एवं 66.67 प्रतिशत उत्तरदाता अपने आवास के पास ही कूरा-कचरा फेंकते हैं और उत्तरदाताओं के घर सप्ताह में साफ होते हैं जिनका 33.33 प्रतिशत है।

मध्यप्रदेश में विशेष पिछड़ी जनजातियाँ

क्र.	नाम	जनसंख्या	गांव	विकासखण्ड	जिले	रहवासी क्षेत्र
1	बैगा	1,31,425	1,163	21	07	मण्डला, शहडोल, डिण्डोरी, उमरिया, अनूपपुर बालाघाट (बैहर)
2	सहरिया	4,17,171	1,159	26	08	ग्वालियर, चंबल संभाग के समस्त जिले
3	भारिया	2,012	12	01	01	पातालकोट, जिला छिन्दवाड़ा
योग		5,50,608	2,314	50	16	

जहाँ पर पीने का पानी 45.33 प्रतिशत लोग खुले में पानी को रखते हैं। दातों की सफाई के प्रति लोग काफी जागरूक हैं जिसका प्रतिशत 58.66 है वहीं पर 25.33 प्रतिशत लोग कभी-कभी दांतों की सफाई करते हैं। लेकिन जब स्नान की बात आती है तो उत्तरदाताओं का कहना था कि वो स्नान हर दिन न करके कभी-कभी करते हैं जिनका प्रतिशत 52 है और 40 प्रतिशत लोग प्रतिदिन करते हैं। पेयजल के लिए अधिकतर लोग अन्य साधन का प्रयोग करते हैं क्योंकि वो लोग या तो जंगल में निवास करते हैं या फिर पहाड़ियों में केवल 24.66 प्रतिशत लोग तालाब का उपयोग करते हैं। जब शरीर के सफाई की बात आती है तो वो केवल पानी से ही अपने को साफ करते हैं जिनका प्रतिशत 42 है और 34 प्रतिशत लोग मिट्टी का उपयोग करते हैं केवल 24 प्रतिशत उत्तरदाता ही साबुन का प्रयोग करते हैं जिसमें महिलाओं का प्रतिशत ज्यादा है। ज्यादातर उत्तरदाताओं को स्वास्थ्य समस्या के बारे मालूम ही नहीं है जिनका प्रतिशत 39.33 रहा, 29 प्रतिशत लोगों का मानना था कि स्वास्थ्य केंद्र नहीं है, आसपास सफाई न होने से हैजा-मलेरिया बीमारी का प्रकोप बढ़ता है जिसका 9.33 प्रतिशत रहा, जिसमें ऐसे भी उत्तरदाता मिले जिन्होंने बताया कि स्वास्थ्य केंद्र दूर है जिनका 15.33 प्रतिशत रहा और 6.66 प्रतिशत का मानना था कि डाक्टर जो है वो स्वास्थ्य केंद्र तक आते ही नहीं है। इस शोध में सबसे ज्यादा चौकाने वाले जो आँकड़े आए वो ये रहा कि बैगा समुदाय की महिलाएँ नैपकिन का प्रयोग नहीं करती और इसके बारे में उनको मालूम ही नहीं है जिनका प्रतिशत 92.33 प्रतिशत रहा वही जो गाँव में कुछ दुल्हन आई हैं वो भी कभी-कभी ही इसका प्रयोग करती हैं जिनका प्रतिशत 8 प्रतिशत हैं। भौतिक एवं पर्यावरण सम्बन्धी स्वास्थता के साथ-साथ व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य की रक्षा एवं आरोग्य रहने के लिए अपने शारीरिक स्वच्छता पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। स्वास्थ्य एवं आरोग्यता प्रत्येक व्यक्ति की अलग-अलग स्वास्थ्य संबंधिक शारीरिक दशाओं पर भी निर्भर करता है।

यथास्थिति विश्लेषण के आधार पर यह सुझाव प्रस्तावित किया जा सकता है कि इस जनजाति के लिए ऐसी योजना का निर्माण करना चाहिए जिनसे उनको सम्पूर्ण स्वास्थ्य शिक्षा दी जा सके तथा किस प्रकार से अपना रहन-सहन एवं स्वच्छता रखे। इसकी भी शिक्षा दी जाए ताकि वह स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सके। बैगा जनजाति के क्षेत्र में सभी जगह प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खोले जाएँ तथा सभी प्रकार के विशेषज्ञ डाक्टर को रखा जाए, वह उनका स्वास्थ्य विभाग द्वारा समय-समय पर मूल्यांकन किया जाए कि वह सुचारू रूप से चल रहा है कि नहीं और उससे वहाँ की जनजातियाँ कितनी लाभान्वित हो रही हैं।

संदर्भ सूची :

- अग्रवाल, डॉ. विनीता, संचार और मीडिया शोध 2015 वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- चौबे, कैलाश, 2001 स्वास्थ्य भूगोल, भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी
- कोली, एन, 2010 रिसर्च मैथलाजी, आगरा, वाई.के. पब्लिशर्स
- ओझा, एन.एन 1990 भारत की सामाजिक समस्याएँ, नई दिल्ली, क्रोनिकल बुक्स प्रा. लि.।
- Traibal Health Buletin 2014, WAHAO Collaborating Center for Health of Indigenous Populastion, Jabalpur ICMR Vol. 20 Special Issue.
- श्रीवास्तव, महेश, 2009 'छत्तीसगढ़ के पहाड़ी कोरवा की सामाजिक व आर्थिक दशा', छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी
- यादव एम.एस, आदिवासी समुदाय में स्वस्थ के कुछ पक्ष- जयपुर रावत पब्लिकेशन
- http://www.mp.gov.in/web/guest/SC&ST&Welfare1
- https://dpi.mponline.gov.in/Tribal/